पथप्रदर्शक व्यापार: बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी की शुरुआत में मालदा रेशम फैक्ट्री की भूमिका (1680–1705)"

Jeewachh Kumar[1]*, Dr Arvind Kumar Verma [2]**
1. Research Scholar,
2. Professor and Head
* Department of History, Purnea University, Purnea, Bihar, India
** Department of History, Purnea University, Purnea, Bihar, India
Corresponding Author: Jeewachh Kumar
Email:-jeewachhkr@gmail.com

सारांश: सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से, कासिमबाज़ार अंग्रेज़ ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) के लिए **रेशम और उससे बने वस्त्रों का प्रमुख बाज़ार** बनकर उभरा। कासिमबाज़ार के आस-पास का क्षेत्र **रेशमी वस्त्रों के उत्पादन में समृद्ध** था, जिनका निर्यात किया जाता था। बंगाल के रेशम में भारी लाभ की संभावना को देखते हुए, लंदन स्थित कंपनी के निदेशकों ने ऐसे क्षेत्रों में विस्तार की योजना बनाई जहाँ **उच्च गुणवत्ता वाले कच्चे रेशम और वस्त्रों के लिए पहले से ही आधारभूत ढाँचा** मौजूद था। इसी क्रम में, **श्री स्ट्रेन्शम मास्टर** को एक विशेष दूत के रूप में बंगाल भेजा गया ताकि इस विस्तार की रणनीति बनाई जा सके।

इस मिशन के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप, ईस्ट इंडिया कंपनी की **छठी फैक्ट्री की स्थापना मालदा में** की गई। हालांकि, **मालदा की शुरुआती स्थापना के वर्षों में कई चुनौतियाँ** सामने आईं, जिससे कंपनी के अधिकारियों ने **मालदा को हूगली और कासिमबाज़ार के अधीन** एक गौण केन्द्र के रूप में देखा और इसके व्यापारिक भविष्य पर संदेह किया। किंतु **दो दशकों के भीतर ही लगातार लाभ** होने लगे, जिससे यह धारणा बदलने लगी।

सन 1698 और 1699 के महत्वपूर्ण घटनाक्रम—जैसे कि **कलकत्ता में ज़मींदारी अधिकारों की प्राप्ति**, **फोर्ट विलियम की स्थापना** (कंपनी का मुख्यालय), और **1706 में सूबाई राजधानी का ढाका से मुर्शिदाबाद स्थानांतरण**— से पहले, **स्थानीय प्रांतीय शासकों के साथ कंपनी के संबंध रिश्वतखोरी और दबाव में उलझे हुए** थे। फिर भी, **उच्च लाभ मार्जिन** ने इस क्षेत्र में कंपनी के भविष्य को **आशाजनक** बना दिया।

यह शोधपत्र **मालदा फैक्ट्री की स्थापना के बाद के प्रारंभिक 25 वर्षों** की पड़ताल करता है। इसमें विश्लेषण किया गया है कि:

- कंपनी ने किस प्रकार की **चुनौतियों** का सामना किया,
- कैसे उन समस्याओं का **राजनयिक प्रयासों या ढाका को भेजी गई याचिकाओं** के माध्यम से समाधान हुआ,
- कैसे **दादनी व्यापारी (Dadani merchants)** नियुक्त किए गए,
- कैसे **पाईकरों (Pykers)** को शामिल किया गया,
- और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, इस अवधि में कंपनी के **व्यापार और लाभ के विकास** की दिशा कैसी रही।

[Kumar, J. and Verma, A.K. **पथप्रदर्शक व्यापार: बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी की शुरुआत में मालदा** रेशम **फैक्ट्री की भूमिका (1680–1705)"**. *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2025; Volume 3, Issue 1:92-97 (July-September). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 5.776

परिचय

यह अध्ययन मालदा क्षेत्र के इतिहास पर केंद्रित है और यह विश्लेषण करता है कि किस प्रकार रेशम कीट पालन और रेशम वस्त्रों की बुनाई की संस्कृति ने इस क्षेत्र को कई शताब्दियों पूर्व एक प्रमुख रेशम केंद्र बना दिया था, जब यूरोपीय व्यापारी पहली बार यहाँ आए। विशेष रूप से यह अध्ययन मालदा में अंग्रेज़ी बस्ती के पहले 25 वर्षों को केंद्र में रखता है, क्योंकि यह कालखंड इस व्यापारिक केंद्र की स्थापना और विकास के लिए अत्यंत निर्णायक था, जो आगे चलकर ईस्ट इंडिया कंपनी की सबसे सफल फैक्ट्रियों में से एक बन गया।

यहाँ "मालदा" का अर्थ आज के मालदा ज़िले से नहीं लिया गया है, क्योंकि "ज़िला" की प्रशासनिक अवधारणा 1813 में अस्तित्व में आई, जिसमें राजशाही, पुर्णिया और दिनाजपुर के कुछ भाग शामिल किए गए थे, और इसे औपचारिक रूप से 1859 तक घोषित नहीं किया गया। इसके बजाय, यह अध्ययन मुग़ल शासन की जन्नताबाद, पंझारा, बारबकाबाद, घोड़ाघाट और ताजपुर सरकारों (अबुल फ़ज़ल की "आइन-ए-अकबरी" खंड द्वितीय के अनुसार) के साथ-साथ दिनाजपुर, राजशाही, रंगपुर और बोगरा (अब बांग्लादेश में) क्षेत्रों को शामिल करता है और मालदा नगर को रेशम केंद्र के रूप में केंद्र बिंदु मानता है।

ब्रिटिश युग से पहले, मालदा नगर आज के "पुराना मालदा" के रूप में जाना जाता था। बाद में महनंदा नदी के विपरीत दिशा में मखदूमपुर में फैक्ट्री स्थापित होने के बाद यह क्षेत्र "इंग्रेज़ाबाद" कहलाया, जो बाद में "इंग्लिश बाज़ार" और "नया बाज़ार" के रूप में जाना जाने लगा। कंपनी के रिकॉर्ड में मालदा का अर्थ इस नई फैक्ट्री से ही था।

भारत में रेशम कीट पालन की शुरुआत कब हुई, इसका सटीक समय ज्ञात नहीं है, लेकिन यह स्पष्ट है कि यह चीन से सिल्क रूट के माध्यम से आया था। रोचक बात यह है कि प्राचीन काल से ही कश्मीर और गौड़ (मालदा के पास) क्षेत्र में शहतूत रेशम कीटों को पालतू बनाकर पाला जाता था। ये दोनों क्षेत्र चीन से सीधा भू-मार्ग द्वारा जुड़े थे—एक तरफ अराकान और दूसरी तरफ कामरूप मार्ग के ज़रिए। (जियोगेगन, 1880)

मुगल काल में मालदा रेशम की मांग आगरा दरबार और कुलीन वर्ग में बहुत अधिक थी। (हबीब, 1963) पटना से बंगाल रेशम को आगरा और सूरत ले जाया जाता था, जहाँ से यह संपूर्ण यूरोप को निर्यात किया जाता था। डचों की फैक्ट्री 17वीं शताब्दी की शुरुआत से मालदा में थी, वहीं अर्मेनियन व्यापारी यहाँ स्वतंत्र व्यापारी के रूप में कार्य करते थे। महनंदा और कालिंदी नदियों के संगम पर स्थित यह नगर गंगा और भागीरथी नदी से सीधा जुड़ा था, जिससे यह वर्षभर नौगम्य बना रहता था। इस भौगोलिक स्थिति ने इसे एक आकर्षक यूरोपीय व्यापार केंद्र बना दिया। अंततः अंग्रेज़ यहाँ आए और इस क्षेत्र के इतिहास को सदा के लिए बदल दिया।

प्रमुख उद्देश्य:

1. मालदा क्षेत्र में अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक महत्वाकांक्षाओं का विश्लेषण करना।
2. उन बाधाओं और अवसरों की पड़ताल करना जिनका सामना कंपनी को इस क्षेत्र में दैनिक संचालन के दौरान करना पड़ा।
3. कंपनी की व्यापारिक संरचना और कार्यप्रणाली की गहन समीक्षा करना।

साहित्य समीक्षा (Literature Review):

अबिद अली खान ने अपनी पुस्तक *"मेमॉयर ऑफ़ गौड़ एंड पांडुआ"* में इस बात की व्याख्या की कि कैसे गौड़ के विनाश और आसपास के क्षेत्र की औद्योगिक गिरावट के बावजूद मालदा का रेशम उद्योग जीवित रहा। इसका कारण था – एक, मालदा की बेहतर संचार व्यवस्था और दो, मुग़ल दरबार में रेशम वस्त्रों की उच्च मांग।

नलिनी कांत भट्टशाली ने मुस्लिम शासन में शुद्ध रेशम की माँग में गिरावट और 'मालदेही' (रेशम और कपास का मिश्रण) रेशम के विकास की चर्चा की, जिसे बाद में यूरोप में भी लोकप्रियता मिली।

इर्फ़ान हबीब के शोध में यह प्रमाण मिलता है कि बंगाल मुग़ल युग में भारत का सबसे बड़ा रेशम उत्पादक क्षेत्र था, विशेष रूप से कसिमबाजार और मालदा क्षेत्र।

पी. जे. मार्शल और **अमिया कुमार बागची** ने दर्शाया कि स्थानीय व्यापारी पूंजी से व्यापारिक संरचना और उत्पादन तकनीक में कोई क्रांतिकारी बदलाव नहीं हुआ।

अनिस मुखोपाध्याय और **तपन राय चौधरी** ने यह समझाया कि जातिगत व्यापारिक संगठन और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के कारण बंगाल में औद्योगिक क्रांति जैसी कोई ज़रूरत महसूस नहीं हुई।

इन सभी विद्वानों के लेखन से यह स्पष्ट होता है कि मालदा बाज़ार की व्यापारिक संरचना और आर्थिक संगठन पर केंद्रित कोई विशेष अध्ययन नहीं हुआ है। यह क्षेत्र अधिकतर कसिमबाजार के विस्तार के रूप में देखा गया।

यद्यपि मालदा का बाज़ार क़सीमबाज़ार जितना बड़ा नहीं था, फिर भी यह एक अनछुआ क्षेत्र था, जहाँ रेशम उत्पादन क्षेत्र में एक ख़ालीपन मौजूद था — जिसे अंग्रेज़ों ने तेज़ी से भर दिया और शीघ्र ही वर्चस्व प्राप्त कर लिया।

अमिया कुमार बागची ने यह दर्शाया कि स्वदेशी पूंजी रेशम उद्योग को पुनर्जीवित करने में विफल रही, लेकिन विदेशी पूंजी के लिए संभावनाएँ भी नहीं बना सकी। तपन राय चौधुरी का अवलोकन यह स्पष्ट नहीं करता कि यूरोप में रेशम की बढ़ती माँग के बावजूद कारीगरों की स्थिति में सुधार क्यों नहीं हुआ।

खान और हबीब ने मालदा के मुग़ल कालीन रेशम व्यापार केंद्र का विस्तार से वर्णन किया है; जबकि मार्शल जैसे अन्य इतिहासकारों ने ज़ाफ़र ख़ान द्वारा मुर्शिदाबाद में राजधानी स्थापित करने के बाद की अवधि पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है।

हालाँकि, लगभग पच्चीस वर्षों की वह अवधि, जब मालदा में अंग्रेज़ी बस्ती अपनी प्रारंभिक अवस्था में थी और वहाँ फैक्ट्री स्थापित करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा — वह कालखंड इतिहास में उपेक्षित रहा है और उसे गंभीरता से अध्ययन की आवश्यकता है।

अंग्रेज़ी चौकी की स्थापना: पुरानी मालदा की नींव

16वीं सदी के उत्तरार्ध से ही क़सीमबाज़ार को भारत का 'रेशम की राजधानी' माना जाता था, जहाँ से बड़ी मात्रा में रेशम वस्त्रों का उत्पादन होता और पटना के रास्ते भारत तथा विदेशों में भेजा जाता था।

यूरोपीय देशों के साथ-साथ अंग्रेज़ भी 17वीं सदी से बंगाल रेशम की ख़रीद कर रहे थे। इस सदी के मध्य तक लाभ इतना अधिक हो चुका था कि अंग्रेज़ों ने क़सीमबाज़ार से बाहर अपने व्यापार को फैलाने का विचार किया। लंदन स्थित ईस्ट इंडिया कंपनी के निदेशकगण इस प्रयास में थे कि ऐसे नए क्षेत्र खोजे जाएँ, जहाँ रेशम कीट पालन और बुनाई की विशेषज्ञता हो, ताकि यूरोपीय बाज़ार की ऊँची माँग और विदेशी पूंजी के आधार पर क़सीमबाज़ार की तरह ही नया केंद्र विकसित किया जा सके।

इसी उद्देश्य से सन् 1676 में श्री स्ट्रेन्सहम मास्टर को बंगाल में कंपनी के प्रमुख अधिकारी के रूप में भेजा गया। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यही व्यापारिक लालसा उन्हें मालदा क्षेत्र में एक नया रेशम केंद्र खोजने की ओर ले गई।

'मालदा डायरी' (संपादक फ़र्मिंजर, 1909) के अनुसार, 14 अक्टूबर 1676 को क़सीमबाज़ार में यह प्रस्ताव रखा गया कि 'मालदा' नामक क्षेत्र, जो राजमहल से लगभग 15 मील दूर है, वहाँ कुशल कारीगर और रेशम की फ़ैक्ट्रियाँ बड़ी संख्या में मौजूद हैं और यह एक संभावनाशील बाज़ार हो सकता है।

यह विचार सर्वप्रथम कंपनी अधिकारी **जॉन मार्शल** ने रखा और मास्टर ने तत्परता से इस प्रस्ताव की जाँच की। उस समय कंपनी के अधिकारी राजमहल के शाही टकसाल जाया करते थे जहाँ कंपनी की चाँदी को नकद में बदलवाया जाता था। यह प्रक्रिया धीमी होती थी, इसलिए वे आस-पास के क्षेत्रों में घूमने जाया करते थे। जॉन मार्शल ने इसी प्रकार मालदा बाज़ार के बारे में जानकारी प्राप्त की थी।

अब मास्टर के आग्रह पर अधिकारी **रिचर्ड एडवर्ड्स** को मालदा भेजा गया और उन्होंने वहाँ कुछ वस्त्र ख़रीदे। (संपादक टेम्पल: 1911)

इस ख़रीदारी का एकमात्र उद्देश्य इस वस्त्र की गुणवत्ता की जाँच करना और उसे लंदन भेजना था, जहाँ से अंतिम निर्णय लिया जाना था। **26 नवंबर 1676** को एडवर्ड्स ने हुगली में स्ट्रेन्सहम मास्टर को क्षेत्र और बाज़ार की विस्तृत रिपोर्ट सौंपी।

नीचे दी गई तालिका **नवंबर 1676** में एडवर्ड्स द्वारा की गई खरीद का विवरण दर्शाती है, जिसकी कुल कीमत **845 रुपये** थी:

क्रम संख्या	वस्त्रों की संख्या	वस्तु का नाम	माप (लंबाई × चौड़ाई)	प्रति पीस मूल्य (रुपयों में)
1	155	कोस्सा (Cossaes)	40 हाथ × 3 हाथ	10 से 14 रुपये
2	55	कोस्सा	40 हाथ × 3 हाथ	10½ से 12½ रुपये
3	29	कोस्सा	40 हाथ × 3 हाथ	9 से 11 रुपये
4	110	कोस्सा	40 हाथ × 2½ हाथ	8 से 10 रुपये
5	54	कोस्सा	40 हाथ × 2½ हाथ	6½ से 8½ रुपये
6	53	कोस्सा	40 हाथ × 2½ हाथ	7¾ से 7½ रुपये
7	500	कोस्सा	35 हाथ × 1¾ हाथ	3 से 7 रुपये
8	200	मलमल (Mulmuls)	36 हाथ × 2 हाथ	5 से 7 रुपये

हालाँकि मालदा कासिमबाजार जितना बड़ा व्यापारिक केंद्र नहीं था, फिर भी यह एक अनछुआ बाज़ार था और रेशम उत्पादन के क्षेत्र में एक शून्य मौजूद था, जिसे अंग्रेज़ों ने शीघ्रता से भरते हुए प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया। बागची ने यह स्पष्ट किया कि देशज पूँजी रेशम उद्योग को पुनर्जीवित नहीं कर सकी, लेकिन विदेशी पूँजी के लिए भी वह ज़मीन तैयार नहीं कर पाई। चौधुरी की टिप्पणियाँ यह स्पष्ट नहीं कर सकीं कि यूरोप में बढ़ती रेशम की माँग के बावजूद, बुनकरों की आर्थिक स्थिति में क्यों सुधार नहीं हुआ।

खान और हबीब दोनों ने मुग़ल काल में मालदा के रेशम बाज़ार की विस्तृत जानकारी दी, जबकि मार्शल जैसे इतिहासकार ज़फ़र ख़ान के मुर्शिदाबाद में राजधानी स्थापित करने के बाद की स्थिति पर केंद्रित रहे। अंग्रेज़ी बस्ती की स्थापना के प्रारंभिक 25 वर्षों का समय, जब मालदा क्षेत्र में ईस्ट इंडिया कंपनी की फैक्ट्री अपने आरंभिक संघर्षों से गुजर रही थी, लंबे समय से इतिहास लेखन में उपेक्षित रहा है और इस पर गंभीर अध्ययन की आवश्यकता है।

अंग्रेज़ों की चौकी की स्थापना: पुरानी मालदा की नींव

16वीं शताब्दी के अंत से ही कासिमबाजार भारत का रेशम केंद्र था। कासिमबाजार-मुर्शिदाबाद क्षेत्र में बड़े पैमाने पर रेशमी कपड़े बनते थे जिन्हें पटना के माध्यम से पूरे भारत और विदेश भेजा जाता था। यूरोपीय देशों समेत अंग्रेज़ भी 17वीं सदी से बंगाल का रेशम खरीदते रहे हैं। इस सदी के मध्य से ही इस व्यापार में लाभ की संभावना को देखते हुए अंग्रेज़ों ने कासिमबाजार से बाहर विस्तार की योजना बनाई। लंदन स्थित कंपनी निदेशकगण ऐसे नए क्षेत्रों की तलाश में थे जहाँ रेशम पालन और बुनाई का पर्याप्त अनुभव हो और जहाँ यूरोप की बढ़ती माँग को देखते हुए नई फैक्ट्रियाँ स्थापित की जा सकें। इसी उद्देश्य से श्री स्ट्रेन्शम मास्टर को 1676 में बंगाल भेजा गया।

'मालदा डायरी' (एड. फर्मिंगर: 1909) के अनुसार, 14 अक्टूबर 1676 को कासिमबाजार में यह प्रस्ताव आया कि 'मालदा' क्षेत्र, जो राजमहल से लगभग 15 मील दूर है, कुशल कारीगरों और रेशम उत्पादन के लिए उपयुक्त है। यह सुझाव सबसे पहले जॉन मार्शल ने दिया, और मास्टर ने तुरंत इस संभावना की जाँच की। उस समय कंपनी के अधिकारी राजमहल स्थित टकसाल में अपने बुलियन का रूपांतरण करवाते थे और उस दौरान पास के क्षेत्रों में भ्रमण करते थे। इसी दौरान जॉन मार्शल को मालदा के बाज़ार के बारे में जानकारी मिली। मास्टर के कहने पर अधिकारी रिचर्ड

एडवर्ड्स को मालदा भेजा गया, जहाँ उन्होंने कुछ रेशमी वस्त्र खरीदे।

26 नवंबर 1676 को एडवर्ड्स ने मास्टर को मालदा बाज़ार और क्षेत्र की पूरी रिपोर्ट भेजी, जिसमें वहाँ के बुनकरों, मौसम, नदी यातायात और डच व्यापारियों की प्रणाली का विवरण था।

डच मॉडल बनाम अंग्रेज़ी रणनीति

डचों की पहले से मालदा में एक फैक्ट्री थी, लेकिन वे मुख्यतः छोटे स्तर के पायकरों (आयोग एजेंटों) पर निर्भर थे। अंग्रेज़ों ने बड़े व्यापारियों को प्राथमिकता दी—चाहे वे मालदा से हों या कासिमबाजार, हुगली आदि से—जो स्थानीय पायकरों को नियुक्त करते थे। एडवर्ड्स के अनुसार, डच व्यापार 60,000 रुपये वार्षिक से अधिक नहीं था और अधिकांश खरीदारी छोटे दलालों से की जाती थी।

12 दिसंबर 1677 को लंदन में कंपनी निदेशक मंडल ने बंगाल परिषद को पत्र में लिखा:

"मालदा की वस्तुएँ... जो सैंपल आपने भेजे हैं वे यहाँ बहुत पसंद किए गए हैं, अतः हमने वहाँ से 80,000 से 1,00,000 रुपये की वस्तुएँ खरीदने का आदेश दिया है..."

13 दिसंबर 1679 को हुगली कंसल्टेशन पेपर में पहली बार मालदा में फैक्ट्री खोलने का उल्लेख हुआ। 22 अप्रैल 1680 को, मथायस विंसेंट (बंगाल प्रमुख), एडवर्ड लिटिलटन (कासिमबाजार प्रमुख), फिटचे नेडहम (मालदा प्रमुख) आदि मिर्जापुर पहुँचे और अस्थायी निवास की तलाश शुरू की।

नई फैक्ट्री: इंग्लिश बाज़ार की स्थापना

स्थानीय राजमहल फौजदार द्वारा लगाए जा रहे जजिया टैक्स से परेशान होकर, अंग्रेज़ों ने फैक्ट्री को महनंदा नदी के पार मकदूमपुर स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। यह स्थान तत्कालीन पूर्णिया नवाब असफंदयार खान के अधिकार क्षेत्र में था, जहाँ अपेक्षाकृत कम हस्तक्षेप की आशा थी।

1 दिसंबर 1680 को 56 बीघा ज़मीन का रजिस्ट्रेशन राजा रायचौधरी नामक ज़मींदार से करवाया गया। इसी ज़मींदार ने निर्माण सामग्री के लिए पास के गौर नगर से ईंटें आदि सस्ते में उपलब्ध कराईं। कुछ ही समय में बुनकर और अन्य कारीगर अंग्रेज़ों के पास मकदूमपुर में बसने लगे।

19 अक्टूबर 1681 को मकदूमपुर फैक्ट्री में कार्य प्रारंभ हुआ, लेकिन परवाना (औपचारिक अनुमति) 19 अक्टूबर 1682 को ढाका से प्राप्त हुआ। अगले कुछ वर्षों में यह नया बाज़ार, जिसे स्थानीय लोग 'इंग्रेज़ाबाद' कहने लगे, तेजी से बढ़ा और 'नया हाट' या 'नया बाज़ार' कहलाने लगा—आज का इंग्लिश बाज़ार, मालदा।

तालिका 1: 1682 में लंदन निदेशकों द्वारा मालदा फैक्ट्री के लिए उत्पाद आदेश*

क्रमांक	वस्तु का नाम	प्रकार	मात्रा / टुकड़ों की संख्या
1	कोसास	उच्च गुणवत्ता वाली मलमल	13,000 टुकड़े
2	मुलमुल (सभी प्रकार)	मलमल	15,000 टुकड़े
3	तंज़ीब	उच्च गुणवत्ता वाली मलमल	10,000 टुकड़े
4	सीरबैंड	उच्च गुणवत्ता वाली मलमल	5,000 टुकड़े
5	सीरसकर	मिश्रित कपड़ा	4,000 टुकड़े
6	रहींग	मलमल	3,000 टुकड़े
7	हमहम	उच्च गुणवत्ता वाली मलमल	4,000 टुकड़े
8	अदाती	उच्च गुणवत्ता वाली मलमल	1,500 टुकड़े
9	मंडिला	मिश्रित व धारीदार कपड़ा	10,000 टुकड़े
10	पुत्ता या बड्र्स आई	मलमल	2,000 टुकड़े
11	पुत्ता (धारीदार)	मलमल	3,000 टुकड़े
12	दोरिया	मिश्रित, उच्च गुणवत्ता	4,000 टुकड़े
13	एलैचेस	मिश्रित कपड़ा	12,000 टुकड़े
14	किसी भी प्रकार का टाफ़टा	रेशम या सूती कपड़ा	20 गठरी (Bales)

स्रोत:

The Diaries of Streynsham Master, संपादक: रिचर्ड टेम्पल (*1911*)
Malda Diary and Consultations (1680–82), संपादक: वाल्टर के. फर्मिंगर (*1909*)

प्रोफ़ेशनल कौशल और प्रारंभिक वित्तपोषण

रोजर फाउलर जैसे विशेषज्ञ रंग बनाते (डायर) यूरोप से 1670–75 के बीच आए थे, जिन्होंने स्थानीय कारीगरों को प्रशिक्षण देकर **गुणवत्ता नियंत्रण** लागू किया। इससे मालदा की रेशमी वस्तुओं की **यूरोपीय बाजारों में लोकप्रियता** बढ़ी।

अंग्रेज़ी फैक्ट्री ने स्थानीय पूंजी से वित्तपोषण लेने में भी रुचि दिखाई। 17वीं और 18वीं शताब्दी की शुरुआत में, अंग्रेज़ व्यापारी रेशम और मलमल की कीमत चाँदी के बुलियन में अदा करते थे, किन्तु बुलियन की ढलाई और उपलब्धता में देरी रहती थी। स्थानीय बड़े व्यापारी जैसे परमानंद शॉ, सुख़ानंद शॉ, कुंजमन शॉ, आदि, फैक्ट्री को **अल्पकालिक ऋण** देते थे (1–1.25 % प्रति माह) जब तक बुलियन उपलब्ध न हो जाए—इस व्यवस्था ने वित्तीय अस्थिरता को दूर रखा। उदाहरणस्वरूप, 1682 में चितरामण शॉ ने 10,000 ₹ ऋण दिया, और परमानंद ने 1680 में 20,000 ₹ दिए ।

आगन्तुक व्यवधान और संधि प्रयास

मालदा फैक्ट्री समय-समय पर अस्थायी संकटों से घिरी थी:

1. **1686 विवाद**: इस अवधि में अंग्रेज़ों और स्थानीय फौजदार के बीच **मसला-बारार शुल्क और व्यापारिक विशेषाधिकार** पर झड़प हुई। अंग्रेज़ों ने नामित 'खेती-व्यापारिक फरमान' के आधार पर निर्मित Makdumpur में दूसरी फैक्ट्री स्थापित की।
2. **शाहजहाँ/1686 संघर्ष**: स्थानीय फौजदार के साथ हाथापाई हुई; मुग़ल सेना ने फैक्ट्री को तोड़ा, जिससे व्यापार तीन वर्षों तक बंद रहा।
3. **1689 वापसी**: इब्राहिम खान द्वितीय के बंगाल नवाब बनने पर अंग्रेज़ों को परवाना मिला—उन्होंने राजमहल और मालदा फैक्ट्री **नगर पुनःस्थापित कराने का अनुरोध** किया।
4. **1695 विद्रोह**: सुबाह सिंह और अफ़गान दल की राजभंग की कोशिशों के कारण कासिमबाज़ार, राजमहल, मालदा अंग्रेज़ों के हाथों से चले गये। लेकिन मुग़ल सेना द्वारा जल्द यह नियंत्रण बहाल किया गया।

इन संकटों के बावजूद, फैक्ट्री हर बार पुनः व्यापार शुरू करने में कामयाब रही, क्योंकि **यूरोपीय बाजार में बंगाल रेशम का लाभ मार्जिन उच्च था**, और लंदन निदेशक निवेश जारी रखने के लिए प्रेरित थे। 1691 में फैक्ट्री पुनर्निर्माण के दौरान, कंपनी ने **हुगली के प्रमुख व्यापारी मथुरदास** को मदद के लिए शामिल किया—समझौते के तहत 10–12% कमीशन देने का प्रस्ताव भी था ।

निष्कर्ष

इस शोध का समापन करते हुए, यह स्पष्ट है कि **मालदा का रेशम केंद्र वैश्विक व्यापार में एक महत्वपूर्ण कड़ी** बन गया।

- फारसी रेशम की गिरावट के बाद, मालदा Kasimbazar के साथ अंग्रेज़ों के लिए **रणनीतिक व्यापारिक केंद्र** बन गया।
- शुरुआती समस्याओं—जैसे डचों से प्रतिस्पर्धा, ठेकेदारी संरचना, और स्थानीय अथॉरिटी विघ्न—के बावजूद ईस्ट इंडिया कंपनी ने **स्थायी प्रभुत्व स्थापित किया**, जो डचों से भिन्न था।
- उन्होंने स्थानीय पयकेर्स व बुनकरों को सीधे **ठेके पर रखा**, जिससे उत्पादन और नियंत्रण बेहतर हुआ।
- लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण यह था कि **निचली आर्थिक स्तर पर—शहतूत किसान और बुनकर वर्ग**—के जीवन में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ। कार्यशील परिस्थितियाँ और मजदूरी इनकी सहभागिता के अनुरूप नहीं बढ़ी, जिससे समग्र वैश्विक बाजार लाभ का **तल से बहुत ऊपर तक ही असर** हुआ।

संदर्भ सूची:

1. बागची, ए. के. (1981)। *व्यापारी और उपनिवेशवाद*। सामाजिक विज्ञान अध्ययन केंद्र, कलकत्ता।
2. भट्टशाली, एन. के. (1922)। *बंगाल के प्रारंभिक स्वतंत्र सुल्तानों के सिक्के और कालक्रम*।
3. चौधुरी, के. एन. (1978)। *एशिया और इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी की व्यापारिक दुनिया 1660-1760*। कैम्ब्रिज।
4. चौधुरी, एस. (1975)। *बंगाल में व्यापार और वाणिज्यिक संगठन (1650-1720)*। कलकत्ता।
5. फज़ल, अबुल। (1891)। *आईन-ए-अकबरी* (खंड 2, मूल फ़ारसी से अनूदित: कर्नल एच. एस. जारेट)। एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल।
6. फर्मिंगर, डब्ल्यू. के. (संपादक)। (1909)। *मालदा डायरी और परामर्श*। एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल द्वारा प्रकाशित।
7. जियोगेगन, जे. (1880)। *भारत में रेशम के बारे में कुछ विवरण*। कलकत्ता।
8. घोष, ए. जी. (1975)। *सत्रहवीं शताब्दी में व्यापारिक केंद्र के रूप में मालदा (पश्चिम बंगाल)*। इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस की कार्यवाही, खंड 36।
9. हबीब, इरफ़ान। (1963)। *मुग़ल भारत की कृषि व्यवस्था (1556-1707)*। अलीगढ़।
10. हैमिल्टन, सी. जे. (1975)। *इंग्लैंड और भारत के बीच व्यापारिक संबंध (1600-1896)*। दिल्ली।
11. हंटर, डब्ल्यू. डब्ल्यू. (1876)। *बंगाल का सांख्यिकीय विवरण (खंड XV)*। लंदन।
12. हंटर, डब्ल्यू. डब्ल्यू. (1868)। *ग्रामीण बंगाल का इतिहास*। लंदन।

13. खान, आबिद अली। (1931)। *गौर और पांडुआ की स्मृतियाँ* कलकत्ता।
14. कुलश्रेष्ठ, एस. एस. (1964)। *मुग़लों के अधीन व्यापार और उद्योग का विकास (1526-1707)*। इलाहाबाद।
15. मार्शल, पी. जे. (1976)। *ईस्ट इंडिया फॉर्च्यून: बंगाल में ब्रिटिश (अठारहवीं शताब्दी में)*। लंदन।
16. मुखोपाध्याय, अनीस। (1991)। *मालदा क्षेत्र में रेशम उद्योग का पतन* (उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोध-प्रबंध)। सिलीगुड़ी।
17. पेम्बर्टन, जे. जे. (1854)। *मालदा जिले की भौगोलिक और सांख्यिकीय रिपोर्ट*। कलकत्ता।
18. रॉबिन्सन, एफ. पी. (1912)। *ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापार (1709-1913)*। कैम्ब्रिज।
19. सलीम, गुलाम हुसैन। (1902)। *रियाज़-उस-सलातीन* (मौलवी अब्दुस सलाम द्वारा मूल फारसी से अनूदित)। कलकत्ता।
20. सरकार, जयचंद्र। (1911)। *ब्रिटिश भारत की अर्थव्यवस्था (द्वितीय संस्करण)*। कलकत्ता।
21. सेठ, मेस्रोवब जैकब। (1937)। *भारत में अर्मेनियन*। कलकत्ता।
22. सिद्दीकी, कैनात। (2018-19)। *मालदा में वस्त्र व्यापार (1659-1707)*। इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस की कार्यवाही, खंड 79।
23. टेम्पल, आर. सी. (संपादक)। (1911)। *स्ट्रेन्सहैम मास्टर की डायरी (1675-1680)* (खंड I)। लंदन।
24. टेम्पल, आर. सी. (संपादक)। (1914)। *पीटर मन्डी की यूरोप और एशिया में यात्राएं (खंड II)*। लंदन।
25. वॉल्श, जे. एच. टी. (1902)। *मुर्शिदाबाद जिले का इतिहास*। लंदन।
26. विल्सन, सी. आर. (1895)। *बंगाल में अंग्रेजों की प्रारंभिक वार्षिक घटनाएँ (खंड I)*। लंदन।
27. *मालदा जिले की भौगोलिक और सांख्यिकीय रिपोर्ट*, कलकत्ता, 1854।
28. *बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रारंभिक प्रशासनिक प्रणाली*, खंड I, लंदन, 1943।
29. आनंद गोपाल घोष – *सत्रहवीं शताब्दी में व्यापारिक केंद्र के रूप में मालदा (पश्चिम बंगाल)*, इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस की कार्यवाही, 1975, खंड 36।
30. कैनात सिद्दीकी – *मालदा में वस्त्र व्यापार (1659-1707)*, इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस की कार्यवाही, 2018-19, खंड 79।

INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERPRETATION OBSERVATION & ANALYSIS